गद्य-खण्ड

रामलोचनशरण

रामलोचनशरण मिथिलाक गौरव पुरुष छलाह। हिनक जन्म 1891 ई. मे भेल छलनि। हिनक पूर्वज जगदीशपुर (शाहाबाद) मे रहैत छलथिन। 1857 मे जे सिपाही विद्रोह भेल आ बाबू कुँवर सिंहक राज-काज पर ओकर जे प्रभाव पड़ल तकरे परिणाम छल जे रामलोचनशरणक पुरखा सभ मिथिला आबि बसि गेलथिन। मुजफ्फरपुर जिलाक राधाउर गामक निवासी बनि गेलाह। अपन कुशाग्र बुद्धिक कारण प्राथमिकेँ कक्षासँ शिक्षकक प्रियपात्र बनि गेलाह। कालान्तरमे स्कूल शिक्षक बनलाह। दरभंगाक नौर्थ ब्रुक स्कूलमे सेहो अध्यापन कयलनि। हिनक निधन भेलनि 14 मई 1971 ई. कऽ। अध्ययन आ लेखनक प्रवृत्ति हिनका प्रारम्भेसँ छलनि। अपन अध्यवसाय आ दृढ़ इच्छा-शक्तिक बल पर 1916 मे दरभंगामे पुस्तक भंडार नामक संस्था खोललनि । विद्यापति प्रेस खोललनि। बादमे पुस्तक भंडारक शाखा पटनामे सेहो खुजल। एतहु हिमालय प्रेस स्थापित भेल। मैथिलीमे 'मिथिला' आ हिन्दीमे 'बालक' सदृश पत्रिकाक प्रकाशनक श्रेय हिनकेँ छनि। बाल-साहित्यक विकास पर हिनक बेसी ध्यान छलनि। 'व्याकरण चन्द्रोदय' बालोपयोगी नामी पोथी अछि। लगभग एक सय पोथीक लेखन, ओ सम्पादन-प्रकाशन कयलनि । रायसाहबक उपाधि भेटलनि।

प्रस्तुत निबन्ध 'प्रवेशिका मैथिली साहित्य' सँ लेल गेल अछि जकर सम्पादक छथि प्रो. हरिमोहन झा आ प्रो. गंगापति सिंह। ई पुस्तक भंडार, लहेरियासराय (दरभंगा) सँ प्रकाशित अछि। एहि निबन्धमे आचार्य मिथिलाक सीमाक उल्लेख कयने छथि। विभिन्न शास्त्र पुराण ओ विद्वानक मतक उल्लेख करैत एकर भौगोलिक सीमाक निर्धारण कयने छथि। बौद्ध आ जैन धर्मक प्रभावक कारणेँ एकर पश्चिमी सीमा घसकिकेँ कनेक पूब आबि गेल आ पूर्वी सीमा कनेक आगू बढ़ि गेल। विभिन्न कारणेँ मिथिलाक सीमा वृहद् विष्णु पुराण आ एतेक धरि जे जार्ज ग्रियसर्नक समयक मिथिलाक चौहद्दीमे अन्तर आबि गेल अछि। एहि सब तथ्य ओ कारणक विवेचन रोचक ढंगसँ सोदाहरण एहि निबन्धमे प्रस्तुत अछि। आचार्य रामलोचनशरण मैथिली प्रेमी छलाह। मैथिल संस्कृतिक रक्षाक लेल सतत साकांक्ष रहलाह। तकरे प्रमाण अछि प्रस्तुत निबन्ध।

मिथिलाक सांस्कृतिक सीमा

मिथिला अथवा तिरहुत पुरान जनपद थीक। राजर्षि निमिक पुत्र 'मिथि' ई नगरी बसौने छलाह जे आगू जा कऽ 'मिथिला-जनपद' प्रसिद्ध भेल।

वृहद्विष्णुपुराणमे सीमा-निर्देशक सङ्ग-सङ्ग ई कतबा नाम ओ चाकर अछि सेहो कहल गेल अछि-

कोशीसँ गण्डकी धरि मिथिलाक नमती चौबीस योजन अर्थात् छियानब्बे कोस एवं गङ्गासँ हिमालयक वन-पर्य्यन्त चकराइ सोलह योजन अर्थात् चौंसठि कोस अछि।

'आईने-अकबरीमे' 'तिरहुत सरकार' क सीमा इएह कहल गेल अछि (जेना -

''अज गङ्ग ता सङ्ग अज कोश ता भूस''

मिथिला-भाषा रामायणक रचयिता चन्दा झा सेहो लिखने छथि -

''गङ्गा बहथि जनिक दक्षिण दिश पूर्व कौशिकी धारा।
पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल-विस्तारा।
कमला, त्रियुगा, अमृता, धेमुड़ा, बागमती, कृतसारा।
मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा।''

सारांश ई, जे मिथिलाक उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गङ्गा नदी, पूर्वमे कोशी एवं पश्चिममे गण्डकी नदी अछि।

एतबा दूरमे मिथिलाक संस्कृति - भाषा, धार्मिक आचार-विचारक संस्कृति - विद्यमान छल।

'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' मे डाक्टर ग्रियर्सन मैथिली भाषा प्रचारक दृष्टिसँ मिथिलाक सीमा निदृष्ट कय गेलाह अछि। एहिसँ बोध होइत अछि जे मिथिलाक पश्चिमी सीमा अओर आगू मोतीहारिअहुसँ पूब बढ़ि आयल अछि।

आइ डाक्टर साहेब द्वारा निदृष्टि सीमहुमे अन्तर आबि गेल अछि।

हँ, तँ मिथिलाक संस्कृतिक उन्मूलन पश्चिमसँ किएक भेल एवं पूब किएक घसकि

गेल ? ई तँ सर्व्वमान्य अछि जे मिथिलाक संस्कृति वेद-सम्मत छल। मिथिलहिमे विदेह एवं लिच्छवीक दुइ राज्य छल-पूबमे विदेहक ओ पश्चिममे लिच्छवीक । ई दुहू राज्य गणतन्त्र रहय। लिच्छवीक राजधानी 'वैशाली' छल। 'वैशाली' रामायण-कालहुमे अत्यन्त प्रसिद्ध एवं सम्पन्न नगरी छल। आइ-काल्हि ओहि स्थानमे मुजफ्फरपुर जिलाक 'बसाढ़' अछि। एहि 'वैशाली' मे 'जैन' क अन्तिम तीर्थङ्कर महावीर स्वामी उत्पन्न भेल छलाह। भगवान् बुद्धो एहि ठाम प्रचार-कार्य कयलन्हि। ओ वैशालीसँ 'कुशीनगर' जाइत काल अपन महिमासँ 'बाया' नामक नदी प्रगट कयलन्हि। बौद्धलोकनिक प्रथम महती सभा वैशालिअहिमे भेल छल। गण्डकसँ पूब 'लौरिया' मे अशोकक लाट (स्तम्भ) आइयो विद्यमान अछि। एहिसँ नीक जकाँ बुझबामे अबैत अछि जे बौद्ध एवं जैन धर्म मिथिलाक पश्चिमीय भागमे प्रबल भय रहल छल। कहबाक प्रयोजन नहि जे ई दुहू धर्म ब्राह्मण धर्मक विरुद्ध अवैदिक छल। वैदिक संस्कृतिसँ एहि दुहू धर्मक संस्कृतियो अवश्ये भिन्न छल। एहीसँ हमरा विचारेँ बौद्ध एवं जैन संस्कृतिक कारण मिथिलाक संस्कृति ओकर पश्चिम भागमे लुप्तप्राय भय गेल। ई तँ स्पष्टे अछि जे मैथिल दार्शनिक लोकनि बौद्ध एवं जैनक प्रचार-कार्यकेँ अपन केन्द्रमे एको रत्ती नहि होमय देलथीन।

एहि विषय पर हम आनहु दृष्टिसँ विवेचना करय चाहैत छी। हमर तँ विचार अछि जे मिथिला देशीय पञ्चाङ्गक व्यवहार व्यापक रूपसँ जतय धरि होइत अछि ततय धरि मिथिलाक संस्कृति-क्षेत्र कहबाक चाही। किछु प्रवासी मैथिल लोकनि अपन प्रवासहुमे मिथिलाक पञ्चाङ्गसँ काज चलाय लेथि ई भिन्न विषय थीक। हमर अभिप्राय ओही क्षेत्रसँ अछि जतय मिथिलाक पञ्चाङ्ग सर्व-साधारणमे व्यापकरूपसँ प्रचलित अछि।

बेश तँ, चलू, पहिने मिथिलाक पश्चिम भाग पर विचार करी। गण्डकक तँ कथे कोन सम्पूर्ण चम्पारन जिला आइ मिथिलाक संस्कृतिसँ बाहर भऽ गेल अछि। अर्थात् ओतय मिथिला देशीय पञ्चाङ्ग प्रचार कनेको नहि अछि - बनारसी पञ्चाङ्गक प्रचार अछि। आब मुजफ्फरपुर जिलाके देखू। अँगरेजी सरकार जे सीमा तिरहुत-विभागक निश्चित कयने छथि ताहिमे मुजफ्फरपुर, दरभंगा, सारन एवं चम्पारनक जिला अछि। किन्तु ई विभाग ने डाक्टर साहेबकेँ नक्शहिसँ मिलैत अछि आ ने संस्कृतिक विवेचनहिसँ युक्तियुक्त बूझि पड़ैत अछि।

ई तँ पहिनहि कहि आयल छी जे बौद्ध लोकनि मुजफ्फरपुरक पश्चिमी भागमे 'वैशाली' केँ अपन केन्द्र बनौलन्हि जे बाया नदीअहुसँ पूब अछि। आब हम यदि मानचित्र मे -जतए 'बाया' नदी मुजफ्फरपुर जिलामे पैसैत अछि-ओही स्थानकेँ केन्द्र मानि कए

बागमतीसँ (जतए ई मुजफ्फपुर जिलाक सीमामे अबैत अछि) हाजीपुर धरि एक चापाकार रेखा मुजफ्फरपुर शहरक पश्चिमीय सीमाकेँ छूबैत खींची तँ स्पष्ट देखि पड़त जे हमर एहि कल्पित रेखाक पश्चिम क्षेत्रमे मिथिला देशीय पञ्चाङ्गक व्यापक प्रचार नहि अछि। एहि रेखाकेँ पूबसँ ई पञ्चाङ्ग चलैत अछि। अतएव सांस्कृतिक दृष्टिसँ मिथिलाक पश्चिमीय सीमा हमर इएह 'कल्पित रेखा' मानल जाए सकैत अछि।

आब पूब दिश आउ। कोशीअहुसँ पूब पूर्णिया जिलाकेँ पार करैत दिनाजपुर जिलाक पश्चिमीय भाग धरि इएह पञ्चाङ्ग चलैत अछि। एकरो कारण स्पष्टे अछि। बौद्धक संस्कृति 'बाया' सँ बहराए कए बागमतीक आगू नहि बढ़ए पौलक। कारण, मैथिल दार्शनिक लोकनि हुनक गतिकेँ अवरुद्ध कए देलन्हि। एहिसँ बौद्ध-संस्कृति दोसरहि बाटेँ बंगालमे प्रविष्टि भेल अर्थात् पटनासँ बहराए कए गङ्गाक दक्षिण मुँगेर होइत देवघरक पश्चिमसँ मयूराक्षीक पश्चिम तटसँ बंगालमे चल गेल अछि, गङ्गासँ दक्षिण एवं कोशीक पूबक ओ क्षेत्र, जतए मिथिलाक पञ्चाङ्ग प्रचलित अछि, मिथिलाक उपनिवेश थीक। एहि उपनिवेशमे सम्पूर्ण पूर्णिया जिला दिनाजपुरक किछु अंश एवं सन्थालपरगन्नाक बहुत पैघ भाग सम्मिलित भय जाइत अछि। एकर कारण अओर अछि। प्राचीने कालसँ बंगाली छात्रक सम्पर्क मिथिलासँ रहल अछि। अतएव ओम्हर मिथिलाक संस्कृति बहुत आगू धरि बढ़ि गेल अछि। एहि प्रकारेँ मिथिला पश्चिमसँ जतेक गमाए देलक अछि, पूबमे ओतेक पाबियो लेलक अछि।

ग्रियर्सन साहेब अपन नक्शामे पुरुलियाकेँ मैथिली-बङ्गला मिश्रित एवं चायबासाकेँ ओड़िया मिश्रित देखौलन्हि अछि। परन्तु ई नक्शा ओहि समयक थीक जखन बिहारक भाग्य बंगालक संगेँ निर्णीत होइत छल। ओहि समयमे पुरुलियामे बंगाली लोकनिक आबरजात होमए लागल एवं फलस्वरूप ओतएक अवशिष्ट मैथिल-संस्कृति लुप्त-प्राय भय गेल । हँ ओतहुका मैथिल लोकनिक घरसँ एम्हर मिथिलाक जे संसर्ग रहल अछि ओही कारणेँ मैथिली भाषा अपन विकृत रूपमे ओतए आइयो विद्यमान अछि। नहि तँ निष्प्राण तँ ओ कहिया ने भय गेल।

आई काल-चक्रक परिवर्त्तन भय गेल अछि। संसारक सभ केओ अपन-अपन संस्कृतिक रक्षामे लीन अछि। एहेन परिस्थितिमे मिथिलहुकेँ चुप रहब उचित नहि। ई काज केवल मिथिलहिक नहि थीक। वर्त्तमान सरकार सभक संस्कृति-रक्षाक प्रयत्न कय रहल अछि। आशा अछि, एहि सुयोगमे आनक संग-संग मिथिलहुकेँ अपन संस्कृतिक रक्षा करबाक अवसर प्राप्त होएत एवं ओ ओहि कार्यमे सफलता प्राप्त करत।

शब्दार्थ

जनपद - क्षेत्र

विद्यमान - मौजूद, उपस्थित

उन्मूलन - जड़िसँ नाश

वेद-सम्मत - वेदसँ स्वीकृत, मान्य

महती - विशाल

विवेचन - व्याख्या

पञ्चाङ्ग - पाँच अंगवला, पतड़ा, ज्योतिष संबंधी वार्षिक विवरणिका

प्रवास - परदेशक निवास

युक्तियुक्त - तर्कसंगत

उपनिवेश - दोसर देशसँ आयल लोकक बस्ती, कॉलोनी,

अवशिष्ट - बाँचल

अबरजात - आवाजाही

प्रश्न ओ अभ्यास

1. 1. मिथिलाकेँ के बसौने छलाह ?

2. वृहद् विष्णु पुराणक अनुसार मिथिलाक लम्बाइ चौड़ाइ लिखू।

3. चन्दा झाक अनुसार मिथिलाक चौहद्दी लिखू

4. मिथिलाक सीमाक पश्चिममे परिवर्त्तनक कारणक उल्लेख करू।

5. लेखकक अनुसार मिथिलाक सीमा कतय धरि मानल जा सकैछ?

6. लेखकक अनुसार मिथिलाक पूर्वी सीमा कतय धरि अछि ?

7. ग्रियर्सन साहेबक अनुसार मिथिलाक पूर्वी सीमा कतय धरि अछि ?

2. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्प चयन करू -

(क) कोशीसँ गण्डकी धरि मिथिलाक नमती अछि-

(क) बीस योजन (ख) चौबीस योजन

(ग) पचास योजन (घ) चालीस योजन

(ख) लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडियाक के लेखक छथि -

(क) जयकान्त मिश्र (ख) राधाकृष्ण चौधरी

(ग) डा० ग्रियर्सन (घ) डा० अब्राहम लिंकन

3. निम्नलिखितकेँ रिक्त स्थानपूर्त्ति करू -

(क) मिथिलाक चौड़ाइ ----- कोस अछि।

(ख) मिथिलहिमे विदेह एवं ------ दू गणराज्य छल।

4. सप्रसंग व्याख्या करू -

(क) संसारक सभ केओ अपन-अपन संस्कृतिक रक्षामे लीन अछि। एहन परिस्थितिमे मिथिलहुकेँ चुप रहब उचित नहि। ई काज केवल मिथिलहिक नहि थीक। वर्त्तमान सरकार सभक संस्कृति रक्षाक यत्न कए रहल अछि। आशा अछि, एहि सुयोगमे आनक संग-संग मिथिलहुकेँ अपन संस्कृतिक रक्षा करबाक अवसर प्राप्त होएत एवं ओ ओहि कार्यमे सफलता प्राप्त करत ।

(ख) प्राचीने कालसँ बंगाली छात्रक सम्पर्क मिथिलासँ रहल अछि। अतएव ओम्हर मिथिलाक संस्कृति बहुत आगू धरि बढ़ि गेल अछि। एहि प्रकारेँ मिथिला पश्चिमसँ जतेक गमाए देलक अछि, पूबमे ओतेक पाबियो लेलक अछि।

5. लघूत्तरीय प्रश्न -

(i) मिथि के छलाह ?

(ii) आईने अकबरीक रचयिता के छलाह ?

(iii) मिथिलाक पश्चिममे कोन नदी अछि ?

(iv) जैनधर्मक प्रवर्त्तक के छलाह ?

गतिविधि-

(i) मिथिलाक सीमांक चित्रांकन करू ।

(ii) मिथिलाक सांस्कृतिक विशेषता पर एक निबन्ध लिखू ।

(ii) मिथिला ओ बंगालक साहित्यिक ओ सांस्कृतिक सम्बन्ध पर अपन विचार प्रकट करू।

निर्देश -

(i) शिक्षकसँ अपेक्षा जे ओ छात्रकेँ मिथिलाक सीमासँ परिचय कराबथि।

(ii) रामलोचनशरणक व्यक्तित्वसँ छात्र लोकनिकेँ अवगत कराबथि।

(iii) मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहाससँ छात्र लोकनिकेँ परिचित कराबथि।

भोलालाल दास

मातृभाषानुरागी भोला लाल दासक जन्म दरभंगा जिलाक कसरौर ग्राममे सन् 1897 ई० मे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम चोआलाल आ माताक नाम सकलवती छल। हिनक प्राथमिक शिक्षा मातृक महिषीमे (सहरसा) भेलनि। मैट्रिक परीक्षा प्रथम श्रेणीमे उत्तीर्ण भेलाक बाद ओ टी.एन. बी. कॉलेज, भागलपुरसँ बी. ए. आ इलाहाबाद लॉ कॉलेजसँ एल. एल. बी. कयलनि। सन् 1925 ई० सँ लहेरियासराय (दरभंगामे) ओकालति आरम्भ कयलनि। हिनक निधन 1977 मे भेलनि।

हिनक प्रमुख रचना-व्याकरण प्रबोध, सुबोध व्याकरण, सरल व्याकरण, गद्य कुसुमाञ्जलि (सम्पादन) 'मिथिला' संग सम्पादन भारती (मासिक पत्रिका, सम्पादन) क अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकामे प्रकाशित अनेकानेक निबन्ध अछि।

मातृभाषा मैथिलीक असीम सेवाक लेल हुनका सम्मानित कयल गेलनि जाहिमे उल्लेखनीय अछि- 'मिथिला साहित्य संस्कृति संस्थान' दरभंगासँ विद्यारत्न, 'पटनाक चित्रगुप्त सभा' द्वारा ' मिथिला सरोज' , 'संकल्पलोक ' लहेरियासराय (दरभंगा) द्वारा मिथिला विभूति, बिहार सरकारक राष्ट्रभाषा परिषद् द्वारा ताम्रपत्र ।

प्रस्तुत निबन्धमे लेखक राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषाक महत्त्वक वर्णन कयने छथि। मातृभाषाक बुन्दसँ राष्ट्रभाषाक सिन्धुकेँ भरल जाइत अछि। भारत एक विशाल देश अछि जाहिमे भाषा, धर्म, जाति, सम्प्रदाय, वेश-भूषा, खान-पान, रूप-रंग आदिक विभिन्नता अछि। दक्षिण भारतीय तेलगू, तमिल, कन्नड़ ओ मलयालम बजैत अछि तँ उत्तर भारतमे गुजराती, मराठी, बंगाली, उड़िया, मैथिली ओ भोजपुरी बाजल जाइत अछि। तेँ एक एहन सर्वमान्य भाषाक आवश्यकता अछि जे सम्पूर्ण राष्ट्रकेँ एक सूत्रमे बान्हय ताहि लेल राष्ट्रपिता महात्मागांधी द्वारा हिन्दीकेँ प्रस्ताव कयल गेल आ समस्त देशमे एकरा स्वीकृति भेटलैक। मुदा नेनाकेँ त्रिभाषाफर्मूलाक अनुसार प्राथमिक शिक्षा अपन मातृभाषामे प्राप्त करब आवश्यक, जाहिसँ ओकर आन्तरिक प्रतिभाक समुचित विकास भऽ सकय। वस्तुतः मातृभाषा ओ राष्ट्रभाषा एक दोसराक पूरक अछि।

राष्ट्रभाषा ओ मातृभाषा

इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी आदि छोट-छोट देश छैक तँ ओहि सभक मातृभाषा अंगरेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि ओकरा सभक राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा सेहो छैक। ओहि सभ ठाम राष्ट्रभाषा आ मातृभाषाक कोनो भेद वा प्रश्न नहि छैक। मुदा भारतवर्ष एक विशाल राष्ट्र अछि। ई एकटा महादेशे अछि जाहिमे पंजाब, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र, मद्रास, केरल आदि भिन्न-भिन्न राज्य इंगलैंड आदि देशक तुलनामे अछि। एहि सब राज्यकेँ मिलाय विशाल भारतीय संघक एक पैघ राष्ट्र संगठित भेल अछि। एहिमे केवल भाषेटा नहि, धर्म, सम्प्रदाय, जाति, लिपि इत्यादिहुक भिन्नता छैक। भाषो सबमे दक्षिण भारतक तेलगू, मलयालम, कन्नड़ आ' उत्तर भारतक मराठी, गुजराती, बंगला, मैथिली, हिन्दी आदि बड़ उन्नत आ' प्रशस्त भाषा अछि। तँ प्रश्न उठैछ जे समस्त भारतीय राष्ट्रक भाषा की हो ?

ई तँ निश्चित अछि जे संसारक प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्रकेँ अपन-अपन स्वतंत्र राष्ट्रभाषा छैक। भारतो राष्ट्रकेँ एकटा कोनो राष्ट्रभाषा अवश्य चाही जकरा द्वारा उत्तरसँ दक्षिण एवं पूर्वसँ पश्चिम धरिक सब राज्य परस्पर बाजब-भूकब, लिखा-पढ़ी आ' राजकाज चलाए सकथि। ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषाकेँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ' ने संसारक आने देशसँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपेँ आदान-प्रदान भऽ सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्रमे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

1947 ई० पर्यन्त भारतवर्ष पराधीन छल। अंगरेज एकर अधिपति छलाह। ओ अपना अंगरेजी भाषाकेँ भारतक राजभाषा बनौलनि आ शिक्षोक माध्यम मुख्यत: अंगरेजिएकेँ रखलनि। मुदा स्वतंत्रताक आन्दोलन-क्रममे नेता लोकनि सात समुद्र पारक एहि विदेशी भाषाकेँ ने राजभाषा, ने राष्ट्रभाषा, ने लोक शिक्षाक माध्यमक लेल उपयुक्त बुझलनि। महात्मा गांधी एतुक्के कोनो भाषाकेँ राष्ट्रभाषा बनेबाक आवश्यकता बुझलनि । यद्यपि हुनक अपन मातृभाषा गुजराती छलनि आ' गुजरातीकेँ अपन लिपि तथा साहित्य छैक तथापि जखन ओ राष्ट्रीय स्वतंत्रताक आन्दोलनमे काश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि आ' अटकसँ कटक धरिक प्राय: सब स्थानक भ्रमण करय लगलाह तँ स्पष्ट देखलनि जे हिन्दीए एकटा एहन भाषा अछि जकरा द्वारा

ओ अपन विचारक प्रचार लोकमे अधिक ठाम कऽ सकै छलाह। शिक्षाक पद्धतियोमे हुनका केवल किरानी वा सरकारी अफसरक सेना तैयार करबाक नहि छलनि, प्रत्युत सब क्षेत्रमे वास्तविक राष्ट्रीयताक भावना उत्पन्न करबाक छलनि तेँ राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे एक समितिक निर्माण करौलन्हि आ तकरा द्वारा भाषाक विषयमे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ अछि मातृभाषा, राष्ट्रभाषा आ विश्व भाषाक अनिवार्यता एवं एहि तीनूक सामंजस्य वा क्षेत्र निर्णय। प्रत्येक राज्य अपना-अपना मातृभाषामे अपन-अपन खास सरकारी काज वा शिक्षाक विकास करौ मुदा समस्त राष्ट्रक काज वा भिन्न-भिन्न राज्यक पारस्परिक काज एक राष्ट्रभाषा हिन्दीक द्वारा हो। तदर्थ शिक्षापद्धतिमे अंगरेजीक स्थान हिन्दीकेँ देल जाए। एकर अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय काजक हेतु अर्थात् संसारक भिन्न-भिन्न राष्ट्रसँ अबरजात वा सम्बन्ध सरोकार रखबाक लेल अंगरेजी वा आने कोनो व्यापक भाषा नवीन वा प्राचीन सेहो विद्यार्थीकेँ अपना-अपना रुचि तथा आवश्यकताक अनुसार पढ़बाक सुविधा हो। अंगरेजी राष्ट्रभाषा जनु रहौ।

जखन 1947 ई० मे देश स्वतंत्र भेल आ तदर्थ सभक सम्मतिसँ संविधान बनल तँ ई लिखि देल गेल जे हिन्दी क्रमशः अँगरेजीक स्थान लै लियै आ' 1965 ई० सँ एकमात्र हिन्दिये समस्त भारतीय संघक राष्ट्रभाषा भऽ जायत। मुदा ताहिसँ पूर्वहि कतोक संशोधन संविधानमे भेल जाहिसँ हिन्दीकेँ ओ स्वीकृत स्थान नहि भेटलैक अछि। सब मातृभाषाकेँ आब राष्ट्रभाषा कहल जाइछ।

त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ' एहिसँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्गसँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो यदि एहिमे किछु साहित्य पौल जाए आ' साहित्य-सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

शब्दार्थ

अधिपति - मालिक

परिवर्धित - विकसित

किंचित - थोड़

प्रशस्त - ख्यात

त्रिभाषा – तीन भाषा

दुरन्त – कठिन

निधि – खजाना

समस्त – सम्पूर्ण

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चुनाव करू :

(i) अनेकतामे एकता कोन देशमे अछि –

(क) फ्रांस (ख) बंगला देश

(ग) भारत (घ) चीन

(ii) भारत स्वतंत्र भेल –

(क) 1954 (ख) 1949

(ग) 1960 (घ) 1947

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(क) मैथिली मिथिलामे लोकक ..... भाषा अछि।

(ख) सरकार बुझैत अछि जे हिन्दी मैथिलीक भाषा आ .....मात्रक अन्तर अछि।

3. निम्नलिखित प्रश्नमे शुद्ध-अशुद्धकेँ देखाउ :

(क) राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसेनक अध्यक्षतामे एक समितिक निर्माण कयल गेल आ तकरा द्वारा भाषाक विषयमे त्रिभाषा सिद्धान्तक योजना स्वीकृत भेल। एकरे नाम पड़ल वर्द्धा योजना।

(ख) गांधीजीक मातृभाषा हिन्दी छलनि।

4. सप्रसंग व्याख्या करू :

(क) ओना तँ एहि सब राज्यक प्रत्येक मातृभाषा भारतीय राष्ट्रक भाषा थिक मुदा कोनो एक भाषाकेँ यावत् समस्त राष्ट्र सम्पूर्ण राष्ट्रक हेतु भारतीय राष्ट्रभाषा स्वीकार नहि करत तावत् ने अपने काज एकतापूर्वक चलत आ' ने संसारक आने

देशसँ समस्त भारतीय राष्ट्रक सार्वजनिक रूपेँ आदान-प्रदान भऽ सकत। विशेषत: शिक्षा क्षेत्रमे भारतीयताक भावना नहि आबि सकत।

(ख) त्रिभाषा सिद्धान्त एतबा स्पष्ट कयने अछि आ' एहिसँ उत्तम कोनो समाधानो नहि देखि पड़ैछ जे निम्नवर्गसँ किछु दूर ऊपर धरि शिक्षाक माध्यम विद्यार्थी वर्गक मातृभाषा हो, यदि एहिमे किछु साहित्य पौल जाए आ' साहित्य सर्जनाक शक्तियो वर्त्तमान रहैक।

5. लघूत्तरीय प्रश्न :

(i) तेलगू, मलयालम ओ कन्नर कोन-कोन राज्यक लोकक मातृभाषा अछि।

(i) वर्द्धा योजना की थिक ?

6. दीर्घोत्तरीय प्रश्न :

(i) मातृभाषाक सम्बन्धमे महात्मा गाँधीक विचार स्पष्ट करू।

(ii) त्रिभाषा सिद्धान्तक अर्थ स्पष्ट करू।

(iii) हिन्दीक समस्या पर लेखकक विचार स्पष्ट करू।

(iv) मैथिलीक भविष्य पर लेखकक विचार स्पष्ट करू।

गतिविधि :

(i) (क) निम्नलिखित शब्दसँ विशेषण बनाउ:

अन्तर, जाति, राष्ट्र, शिक्षा, सिद्धान्त, विकास, परस्पर, भारत, भाषा, साहित्य।

(ii) छात्र लोकनि भारतक विभिन्न राज्यक मातृभाषाक ज्ञान प्राप्त करथि।

निर्देश :

(i) शिक्षक छात्रकेँ मातृभाषाक महत्त्व बताबथि।

(ii) छात्रकेँ भोलालाल दासक मैथिली सेवाक विभिन्न आयामसँ परिचित कराबथि।

जयकान्त मिश्र

डॉ. जयकान्त मिश्रक जन्म मधुबनी जिलाक गजहारा ग्राममे 20 नवम्बर 1922 ई. मे भेल। हिनक पितामह म. म. जयदेव मिश्र एवं पिता म. म. उमेश मिश्र छलथिन। 1943 ई. मे ओ प्रयाग विश्वविद्यालयसँ अंग्रेजीमे एम. ए. कऽ 1944 ई. मे ओहि विश्वविद्यालयमे अंग्रेजीक व्याख्याता पद पर नियुक्त भेलाह, जतयसँ ओ विश्वविद्यालय प्राचार्य एवं अंग्रेजीक विभागाध्यक्ष पदसँ सेवा निवृत भेलाह।

'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' शोध-प्रबन्ध पर हिनका पी-एच. डी. क उपाधि प्रदान कयल गेल। तदुपरान्त साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा हिनका भाषा सम्मान भेटल।

मैथिली आन्दोलनक अग्रणी डॉ. जयकान्त मिश्रक मौलिक कृति अछि- ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (दू भाग), वृहत् मैथिली शब्द कोष (दू खण्ड), तिरहुता ककहरा, मैथिलीमे प्राथमिक शिक्षा, ओ ए इन्ट्रोडक्शन टू फॉक लिटरेचर (दू खण्ड)। हिनक द्वारा सम्पादित कृतिक नाम अछि - विद्यापतिक गोरक्ष विजय, किरतनिया नाटक, ज्योतिरीश्वरकृत मैथिली धूर्त्तसमागम, लाल कविक गौरी स्वयंवर, नन्दीपतिक श्रीकृष्ण केलिमाला, शिवदत्तक गौरीपरिणय आदि।

मिथिला, मिथिलावासी, मैथिलीक जीवन भरि उत्थानक आकांक्षी डॉ. जयकान्त मिश्रक निधन 3 फरवरी 2009 कऽ भऽ गेलनि। मैथिली भाषा आन्दोलनक इतिहासमे हिनक स्थान सर्वोपरि अछि। प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीकेँ स्थान दिअयबाक विन्दु हो अथवा साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक स्वीकृतिक प्रश्न - जयकान्त मिश्रक योगदानक उल्लेख अपरिहार्य अछि। मैथिलीक सेनानी, मैथिली साहित्यकेँ अखिल भारतीय परिचिति देनिहार जयकान्त मिश्र मिथिला-मैथिलीक अविस्मरणीय अंग छथि। ओ आइयो प्रेरणास्रोत छथि, सभ दिन रहताह। हिनक भूमिका साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि रूपमे महत्त्वपूर्ण अछि।

प्रस्तुत निबन्ध 'भाखा' पत्रिकासँ लेल गेल अछि। एहि निबन्धमे लेखक पं. जवाहर लाल नेहरूक महत्ता ओ विद्वत्ताक उल्लेख कयने छथि। पं॰ नेहरू पूजनीय छलाह अपन गुण वैशिष्ट्यक कारणेँ । हिनक चरित्रमे उदारता एवं शालीनता भरल छल। साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक समावेशक प्रसंग लेखककेँ अनेक बेर पं. नेहरूसँ भेट करबाक अवसर भेटलनि आ प्रत्येक बेर हिनक सदाशयता ओ व्यवहार देखि ई आश्चर्य चकित भेलाह।

जवाहर : जेहन देखलहुँ जेहन पओलहुँ

आब हमहूँ बूढ़ भेल जाइत छी। बहुतो अनुभव भेल, बहुतो व्यक्तिकेँ देखल, बहुत व्यक्तिक सम्बन्धमे सुनल। ताहि सभमे सभसँ अधिक प्रभाव ओ प्रेरणा देनिहार व्यक्तित्व, जनिकासँ मिथिला ओ मैथिलीक हेतु कार्य करबाक क्रममे सम्पर्क भेल, पाओल जवाहर लाल नेहरूमे।

ओना प्रयागमे हमहूँ रहैत छलहुँ, प्रयागेमे ओहो रहैत छलाह। नेनहिसँ हुनकर कीर्त्ति सुनैत-देखैत छलहुँ। सभसँ पहिने जे हुनका देखल से मोन पड़ैत अछि। इलाहाबाद यूनिवर्सिटीक लार्ज लेक्चर थियेटरमे एकटा छात्र यूनियनक तत्त्वावधानमे कोनो विषयक परिसंवाद गोष्ठीमे। इतिहासक प्रसिद्ध विद्वान् डाक्टर ईश्वरी प्रसाद बाजिकेँ हटल रहथि, तखनहि ओ मंच पर कुदिएकेँ ठाढ़ भेलाह । डॉ. ईश्वरी प्रसादक उक्तिकेँ जे ओ झाड़ि कए प्रतिवाद कएलथिन्ह से हमरा आइयो ओहिना स्मरण होइत अछि - "ई सभ पुरानपंथी विचार थिकनि- एतेक आगू संसार चल गेल अछि - तथापि प्रोफेसर लोकनि आधुनिकता एवं प्रौढ़ताकेँ नहि पबैत छथि। धिक्कार छनि जे ओ सभ आइओ काल्हि एहने विचार पोसने छथि ..... इत्यादि।" विषय की छलैक, से सभ नहि स्मरण अछि मुदा हुनक तेजी ओ मुहफट वाणी नहि बिसरैत अछि। भाषण ओ अंग्रेजीएमे देने छलाह। दोसर बेर ओ इलाहाबाद विश्वविद्यालयक प्रायः सत्तरिम वर्षक उत्सव समारोहमे तथा ओकर हीरक वा स्वर्ण जयंतीक अवसर पर विशेष रूपेँ मोन पड़ैत छथि- ओहुँ अंग्रेजीएमे बजलाह। हमरा हुनक वाणी संगीतमय कोनो कविक वाणी सन बुझाएल- गद्यमे काव्यक सृष्टि करैत ओ प्राचीन भारतक उठैत ओ चिकरैत नवीन युगमे पदार्पणक कथा कहि रहल छलाह- हुनका वाणीमे आवेश छल, किछु संगीत छल,किछु युग के ललकारबाक एवं नवयुवककेँ आह्वान करबाक कछमछी छल।

ई सभ तँ जे छल से छल। 1942 क आन्दोलनक समय हुनक जहल जाइत काल देशक नामसँ छोटछीन सन्देश हमरा अत्यधिक प्रभावित कएलक- Freedom is in peril. Defend it with all thy might. अर्थात् "देशक स्वतंत्रता आइ संकटमे अछि। जतेक शक्ति हो से लगाए ओकरा बचबैत जाउ।" हुनक हस्तलेखक ई फोटो अखबारसभमे छपल हम देखने रही।

1961 मे इलाहाबादक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति द्वारा दसटा दुर्लभ प्राचीन मैथिली पोथी प्रकाशित कएल गेल छल। तकरा सभक विमोचन समारोह एकटा बेस पैघ मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीमे 15 दिसम्बर 1961 कैं अल्पसंख्यक भाषा सबहिक आयुक्त इलाहाबाद हाइकोर्टक अवकाश प्राप्त मुख्य न्यायाधीश बी. मल्लिक महानुभाव कएने छलाह तथा ओहि अवसरपर मुख्य अतिथि कविवर श्री यात्री छलाह।

एहि आयोजनक क्रममे पंडित जवाहर लाल नेहरू इलाहाबाद आएल रहथि। तैं समिति ई निर्णय कएलक जे किएक ने हुनका ई पुस्तक सभ दए, मैथिलीक समस्यासँ, विशेष कए साहित्य अकादेमीसँ सम्बन्धित वार्तालाप कएल जाए। पंडितजी साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष छलाह तैं एहि कार्यक उपादेयता बुझल गेल। 21 दिसम्बर 1961 कैं हुनकासँ भेंट करबाक हेतु हम (ओहि समितिक अध्यक्ष रही) एवं कुमार वैद्यनाथ चौधरी (जे समितिक सचिव छलाह) आनन्द भवनमे पंडितजीसँ परामर्श करबाक हेतु आनो पोथीसभ सहित अंग्रेजीमे हमर मैथिली साहित्यक इतिहास 2 भाग लय) गेलहुँ। ओतए इलाहाबादक बहुतो गण्यमान्य लोक छलाह। मल्लिक साहेब सेहो ओहिठाम छलाह- ओ बाजि उठलाह- देखू, ई मैथिलीबलासभ थिकाह । ताबतेमे आइयो ओहिना मोन पड़ैत अछि, पंडितजी उपरका महलपर पहुँचल छलाह, आर 3-4 मिन्टहिक भीतर नीचा कक्षमे झटसँ आबि गेलाह- दिल्लीसँ आएल रहथि तकर कोनो थाकनि नहि देखाएल। चूड़ीदार पएजामा-अचकन-गुलाबक फूल सभ अनामति। प्रयाग, ओ अपन घर, प्राय: प्रधानमंत्री जकाँ मात्र नहि अबैत छलाह, प्रयागक निवासी थिकाह, एतुका अपन इष्ट मित्र-अड़ोस-पड़ोसक वर्गसँ कोना प्रेम ओ सहृदयतासँ, स्नेहपूर्वक भेंट कएलनि से देखि-देखि बड़ प्रभावित भेलहुँ। एकटा तीर्थ पुरोहित (पण्डा) भुट्टे सन छलाह तकरोसँ अपेक्षा छलनि-से आश्चर्य लागल, कारण लोक हुनका धार्मिक नहि कहनि, मुदा ओकरासँ आशीर्वाद फल-फूल नारिकेरि लेलथिन। प्राय: 20-22 गोटे ओहिठाम रहथि। सभसँ कुशल पुछैत घूमि-घूमि गप्प करैत छलाह। तैखन हमहूँ सभ आगाँ बढ़ि पोथी सभ जे अनने रही, देलिअनि। ओ देखलनि, उनटा-पुनटाकैं पढ़लनि आर बजलाह (हिन्दीएमे) जे नीक लगैछ। अवकाश भेहला पर एकरा सभकैं पढ़ब। ई कहि पोथीसभ राखए लेल ककरो दए देलथिन । ताबत चारूकात लोकसभमे ओ घूमि-घामि दू- चारि शब्द बजैत चलैत-फिरैत रहलाह। तखन हम सभ पुन: हुनकासँ गप्प करए लगलहुँ - हम कहलिअनि जे मैथिलीक सम्बन्धमे नाना प्रकारक भ्रान्ति पसरल छैक तथा ओकर प्रगतिमे बाधा राखल जाइत अछि। चोट्टे पंडितजी बजलाह जे "भाषा और साहित्य के बारे में विवाद की क्या बात है ? किसी को मैथिली या राजस्थानी से विवाद क्यों हो सकता है ?"

बस एतबे ओहि दिन हुनक भावना बुझल। स्थानीय पत्रसभमे ई समाचार दए देल ओ आशा भेल जे आब कोनो युक्तिसँ साहित्य अकादेमीक मैथिलीक हेतु विचार-विमर्श करी तखने हिनकासँ बेसी लाभ भए सकैछ।

जनवरी-फरवरी 1962 कँ हम एक -दूटा पत्र साहित्य अकादेमीकेँ मैथिलीक मान्यता देबाक हेतु देल। तकर उत्तर साहित्य अकादेमीक सचिव कृष्णा कृपलानी 3 मई 1962 कँ पत्र संख्या एस० ए० -14 /1391 द्वारा देलनि जाहिमे ओ लिखलनि जे हिन्दीक अंग मानि साहित्य अकादेमी मैथिलीओक कार्यक्रम रखने अछि - ओकरा कोनो कम आदरणीय नहि मानैत अछि।

बस एही पत्रक संन्दर्भ दए हम पंडितजीकेँ पत्र देबए लगलहुँ । हमर कहब भेल जे अपने कहने रही - "किसी भाषा और साहित्य के बारे में झगड़े की बात क्या हो सकती है?" मुदा कृपलानी मैथिलीकेँ हिन्दीक अंग मानीएकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान देने छथि। हम कहलिअनि जे एही प्रकारेँ मैथिलीक सम्बन्धमे झगड़ा-विवाद बाधक होइत अछि। मैथिली लेखक जे पोथी वा कविता मैथिलीक बुझि लिखैत छथि, तकरा हिन्दीक वा अन्य कोनो भाषा बनएबाक अधिकार ककरो कोना भए सकैत छैक? मैथिली भाषी वा मैथिलीक लेखक यदि अपन साहित्य ओ भाषाकेँ हिन्दीक अंग नहि मानैत अछि, आओर ओकरा पृथक् अपन भाषा ओ साहित्य मानैत अछि, तखन ओकरे कथनकेँ मानबाक चाही। हम उदाहरण देने रहिअनि जे भारतवासी भारतीय थिकाह अथवा ब्रिटिश साम्राज्यक अंग थिकाह से कहबाक अधिकार भारतवासिएकेँ छैक, ने कि ब्रिटेनक निवासीकेँ।

पंडितजी पत्र देलनि जे हुनका हमर तर्क सुन्दर ओ समीचीन बुझाइत छनि (ओ interesting शब्देँ ई भाव व्यक्त कएने छलाह) तथा हुनका जे हम पत्र देने छिअनि तकरा ओ साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष डा. राधाकृष्णनकेँ समुचित विचार कए उत्तर देबाक हेतु पठाए देने छथि। ओतएसँ जे पत्रसभ उत्तरमे आयल तकर पुनः दू-तीन बेर हम प्रत्युत्तर देलहुँ। पश्चात् चीनी आक्रमणक कारणेँ देशक क्षुब्ध वातावरणमे हम तटस्थ भए चुप बैसि गेलहुँ।

अग्रिम वर्ष अर्थात् फरवरी 26, 1963 कँ एकटा पत्र हम साहित्य अकादेमीक सचिवकेँ बहुत तामस ओ क्षोभसँ देबाक नेआर कएल- से पत्र आइओ हमरा लग सुरक्षित राखल अछि। ओ पठाओल नहि गेल। कारण, ताबे हमरा पत्र भेटल जे हम साहित्य अकादेमीक साधारण सभाक सदस्य निर्वाचित भए गेलहुँ अछि आ ओकर अधिवेशन 31 मार्च 1963 कँ होएत। हम धन्यवाद दैत अपन स्वीकृति 6 मार्च 1963 कँ पठाओल आओर संगहि मैथिलीक सम्बन्धमे एकटा विधिवत् प्रस्ताव पठाए देल।

कृपलानीजी लिखलनि जे एतद् सम्बन्धी कोनो प्रचार पत्र ओ नहि बँटताह वा लोककेँ देथिन ओ हमरा स्वयं करए पड़त। हँ, प्रस्ताव कार्यसूचीपर राखल जाएत। हम 4 पृष्ठक छोट-छीन निवेदन मिथिलारक्षक उदाहरणसभ दैत तैयार कए लए गेलहुँ। संगहि एकटा विस्तृत, 'द केस ऑफ मैथिली बीफोर द साहित्य अकादेमी' नामक प्रतिवेदन अंग्रेजीमे तैआर कएल एवं तकरा सेहो 31 मार्चक अधिवेशनमे पढ़बाक हेतु लए गेलहुँ।

ओहि दिनुक सभटा दृश्य ओ घटनाक्रम आइओ मोन अछि। ठीक चारि बजे बैसारी छलैक । सभ सदस्य पंडितजीक बाट तकैत बैसल छलाह। लगेभग 80 गोटे छलाह - उमाशंकर बाजपेयी (गुजराती) , डा. श्री नगेन्द्र (हिन्दी) डा. श्री रामकुमार वर्मा (हिन्दी), राघवन् (संस्कृत), ''संधांशु'' जी (बिहार), हरेकृष्ण महताब (उड़िया), मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) आदि। हम सभकेँ एकटा कए छोटका प्रचार पत्र अपनहिसँ देने रहिअनि, मैथिली लिपिक छापल वस्तुसभ तथा टाइप कएल छोटछीन ''निवेदन''। सुधांशुजीकेँ हम कहलिअनि जे ई काज हमरेटा नहि अपनहुक थिक, ओ हमरा मैथिलीअहिमे कहलनि - ''हँ, अपने आगाँ बढ़ूँ, शुभं भूयात्।'' ताबेमे विज्ञान भवनक ओहि कक्षमे टाँगल देवाल घड़ी ठीक 4 बजे टनटन घंटी बजओलक आ ताही संग पंडितजी प्रवेश कएलनि। पंडितजीक अबैत देरी सभ ठाढ़ भए हुनक स्वागत कएलक। सभाक कार्यवाही खटाखट आरम्भ भेल। कृपलानी प्रत्येक कार्यसूचीक विषयसभक सम्बन्धमे टाइप कएल विवरण संक्षेपमे पढ़ैत गेलाह ओ तकरा लोक एकदम निश्शब्द अनुमोदन करैत गेल। हमर प्रस्ताव प्रायः अन्तिम दसम संख्या पर रहए। से जखन अएलैक तँ पंडितजी किछु मुसकुराइत बजलाह -''एहिमे सिन्धीक संग मैथिलीकेँ जोड़ल छैक से की इहे विदेशमे चल गेल भाषा छैक ? हम उत्तर देल जे सँविधानक अष्टम अनुसूचीमे जाहि भाषाक गणना नहि छैक ताहि भाषामे सिन्धी ओ मैथिली दुहू छैक जे साहित्य अकादेमीक नियमावलीक अनुसार ओहो स्वीकृत पएबाक समान अधिकारी भए सकैछ, तेँ सिन्धीक संग मैथिलीक प्रश्न जोड़ल गेल अछि।

ताहिपर पंडितजी किछु कहबाक उपक्रम कएलनि। ताबे पी. ई. एन. मे हमर परिचित मित्र गुजराती कवि उमाशंकर जोशी (जे पछाति साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष भेलाह) ठाढ़ भए निवेदन कएलथिन जे प्रस्ताव कएनिहार (श्री जयकान्त बाबू) स्वयं आएल छथि। हुनका प्रस्ताव रखबाक अवसर देल जाइक। एहिपर पंडितजी हमरा दिस तकलनि। हम तँ तैआरे बैसल रही। उठि कए अपन विस्तृत वक्तव्य जे अंग्रेजीमे छल बाँचए लगलहुँ।

वक्तव्य हमर पछाति छपल ओ आइओ उपलब्ध अछि। ताहिमे हम पहिने पंडितजीकेँ ''आनन्द भवन'' मे जे भेंट भेल छल तकर विवरण दैत स्मरण देआओल जे ''अपने कहने रही मैथिली भाषा ओ साहित्यक सम्बन्धमे झगड़ा- विवादकेँ कोनो स्थान नहि छैक। ताही आधारपर हम अपने लग निवेदन कएल जे मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे स्थान भेटैक; जाहिसँ मैथिली उन्नति करए। अपने आश्वासन देलहुँ जे एहि सम्बन्धमे समुचित विचार करबाक हेतु कार्यालयकेँ आदेश देने छी। एम्हर चीनी आक्रमणक कारण हम किछु शिथिल भए गेल रही। मुदा अकादेमीक सदस्यता हमरा भेटल तेँ आब पुनः सचिवसँ अनुमति लए ई प्रस्ताव सभक विचारार्थ राखल अछि।

तकरा पश्चात् हम क्रमशः अपन समस्त वक्तव्य पढ़ए लगलहुँ। लगभग 45 मिनट हमर भाषण भेल। पंडितजी ध्यानसँ सभटा सुनलनि। ओहि बीच हमर मित्रलोकनि विशेषतः डा. राघवन (मद्रास विश्वविद्यालयक संस्कृत प्रोफेसर) जनिकासँ 1948 मे दरभंगा प्राच्य विद्या सम्मेलनमे खूब परिचय भेल रहए, पत्राचारो रहए) हमर कोट पकड़ि घीचए लगलाह- बैस जाउ, बहुत अधिक बजलहुँ, पंडितजी एतेक भाषण नहि बर्दाश्त करताह, अहाँक पक्ष दुरि भए जाएत, ओ खिसिआए जेताह फुसफुसाए कहैत रहलाह। हम से सभ नहि सुनि अपन वक्तव्य पूरा-पूरा देल। पंडितजी तमसाएल एकदम नहि छलाह। लोकक कहब भेलैक जे एतेक काल हुनका ककरो सुनैत रहबाक स्वभाव नहि छनि। ई हमरे सौभाग्य भेल जे ओ एतेक काल हमरा सुनैत रहलाह। आन्ध्र प्रदेशक एकटा विद्वान् पछाति एहि भाषणक विवरण डा. सुनीति कुमार चटर्जीकेँ देलथिन जे ओ हमरा लीखि पठओलनि। ताहिसँ बुझब जे हमरा भाषणसँ पंडितजी सद्यः कतेक प्रभावित भेल रहथि।

हमर प्रस्तावक अनुमोदन डा. श्री रामकुमार वर्मा (इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे हिन्दीक प्रोफेसर ओ अध्यक्ष) कएलनि। हम सदस्य सभसँ भेंट कएने रही। विभूति भूषण मुखोपाध्याय (बंगला), मामा बालेकर (मराठी) आदि हमरा पक्षमे छलाह। तखन पंडितजी स्पष्ट ओ दृढ़ स्वरमे बजलाह - ''मानलहुँ जे मैथिलीकेँ स्वतन्त्र ओ विशिष्ट भाषा ओ साहित्य परम्परा छैक। प्रश्न उठैत अछि जे तथापि ओकर संरक्षण ओ पोषण होअए अथवा नहि।''

एहिपर तखन अनेक विचार-विमर्श, तर्क-वितर्क होमए लागल। उड़िसाक नेता डा. हरेकृष्ण महताब बजलाह जे मैथिलीक प्रति देशमे न्याय होएबाक चाही। श्री मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) प्रस्ताव कएल जे एकटा राष्ट्रीय मैथिली कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक

मान्यताकेँ जाँच करए। मिथिलाक नेता सुधांशुजी प्रस्तावित कएलनि जे एकटा छोट-छीन पुरस्कार मैथिलीओ पोथीपर देबाक औचित्य छैक। हम एहि प्रस्तावक विरोध कएलहुँ आर बजलहुँ जे मैथिली लेखककेँ ककरोसँ छोट पुरस्कार भेटलासँ नीक कोनो पुरस्कार भेटबे नहि करए - भेटए तँ अन्य भारतीय भाषा सभक समान पुरस्कार भेटए अन्यथा कोनो नहि भेटओ, से बरू नीक। हिन्दीक प्रतिनिधि ई भय देखओलनि जे देशमे आरो भाषा सभ एहि प्रकारेँ मैथिलीक समस्या उजागर कएलापर उभरत तथा तकर फल ई होएत जे एखन, जखन राष्ट्रपर चीनी संकट आएल छैक राष्ट्रमे विघटनशील तत्त्व सभ जागि उठत, तेँ ई ठीक नहि होएत।

अन्तमे नेहरूजी बजलाह जे आब ई विचार कार्यकारिणीपर छोड़ल जाए। जे उचित होएत; विचार कएल जाएत। ओहि दिन एतबे भेल। मुदा पश्चात् डा. श्री नगेन्द्र (दिल्ली विश्वविद्यालयक हिन्दी विद्वान्) हमरा चेतओलनि जे मिश्रजी अहाँ राष्ट्रविरोधी चक्रचालिमे फँसि राष्ट्रक बड़ पैघ अहित करबाक प्रयत्न कए रहल छी। अस्तु।

हमरा एकरा पश्चात् मोन पड़ल जे एक वा दू वर्ष पूर्व आर. आर. दिवाकर महाशय (केन्द्रीय मंत्री) रेडियोमे मैथिलीक कार्यक्रम करबाक आग्रह कएलापर लिखने छलाह जे की मैथिली एकटा 'ग्रन्थस्थ' भाषा थिक? हम ताही आधार पर निश्चय कएल जे दिल्ली मध्य एकटा विराट मैथिली पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन करी। ताहिसँ पढ़ल-लिखल सर्वसाधारणकेँ मैथिलीक पक्षक सम्यक् परिचय होएतैक। हम एहि उद्देश्यसँ प्रोफेसर हुमायूँ कबीरसँ, जे भारत सरकारक तखन सांस्कृतिक मन्त्री छलाह, भेंट कएल जे ओ ओहि प्रदर्शनीक उद्घाटन करथि। ओ कहलनि जे हुनकासँ नीक पंडितजी एहि कार्यक हेतु उपयुक्त होएताह- कारण सभ हुनके मुँह तकैत छथि-ओ जँ प्रभावित होएताह तँ मैथिलीकेँ सभ लाभ भेटत।

हम एहि बातकेँ बुझल । नेहरूक सहानुभूति ओ संवेदनशीलतासँ परिचिते रही। हुनकर उदार ओ वैज्ञानिक दृष्टिकोणपर आस्था भए गेल छल। तेँ हुनका पत्र देलिअनि। ओ तुरन्त उत्तर देलनि। बहुत विनम्र ओ संतुलित, सहानुभूतिपूर्ण ओ विशुद्ध साहित्यकारक दृष्टिकोणयुक्त उत्तर देलनि। ओ उद्घाटन करब (तकर चर्चो नहि कए लिखलनि जे यदि प्रदर्शनीक समय ओ भारतवर्षमे रहताह तँ अवश्य प्रदर्शनीमे सम्मिलित होएताह। हम अप्रैलसँ पुस्तकादि संग्रह करए लगलहुँ - पूर्वहुँ मैथिली पुस्तक प्रदर्शनी करबाक अनुभव छल। प्रदर्शनीक संगे-संग मैथिली साहित्यक विशदता, विविधाताक आइ-आइ धरिक अक्षुण्णताक प्रदर्शन करबाक आयोजन करए लगलहुँ। हमर सहयोगीसभ - अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति (प्रयाग) क कार्यकर्त्तासभ

-उमाकान्त तिवारी, राघवाचार्य शास्त्री, कुमार वैद्यनाथ चौधरी, कुमार श्री जयानन्द सिंह (बनैली डेओढ़ी), प्रोफेसर आदित्य गोपाल झा, श्री चन्द्रकान्त मिश्र आदि कार्य करए लगलाह। हमर अनुज श्री रमाकान्त बाबू ओ विजयकान्त बाबू अपना-अपना सरकारी विभागक सहयोगक संग लागि गेलाह। दूटा पैघ बंगला ठीक भेल, साउथ एक्स्टेन्शनमे। "आजाद भवन" इन्द्रप्रस्थ स्टेटमे चारिटा पैघ-पैघ हॉल भाड़ापर लेल गेल। अन्तमे पं. जवाहर लालकेँ पत्र देल जे आयोजन पूर्ण भऽ गेल अछि, ओ अपना कार्यक्रमक आधारपर कहिआ प्रदर्शनी हो से निर्णय करथु। किछुए दिनुक प्रतीक्षा कएलापर ओ दिसम्बर 9 तारीखकेँ 7 बजे साँझखन प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक समय निर्धारित कएलनि। हमरा कखनो अन्धकारमे नहि रखलनि, आ ने खुशामद करबओलनि ई सौजन्य आन नेतामे नहि देखैत छी।

हम तँ मैथिलीक यात्रा नेहरूजीकेँ ओ उदारता आदर कएलनि - एखन तकरे कथा कहए बैसल छी। प्रदर्शनीक हेतु ओ मात्र बीस मिनट निर्धारित कएने छलाह - से डेढ़ घंटासँ उपर समय देलनि। ओहि दिन थाकल बेसी लागथि। दू-तीनटा कथा विशेष मोन अछि- पार्लियामेन्टसँ भरि दिनुक थाकल, बूढ़ ओ लम्बा-चौड़ा व्यक्तित्व तइयो कनेको अगुताइ नहि देखओलनि- प्रत्येक कार्यक्रम ध्यान मग्न ओ एकाग्र भए सुनलनि, देखलनि, रुचि लेलनि - आइ तँ जे मैथिलीक प्रोफेसर वा नेता कोनो समारोहमे अबैत छथि तँ भाषण दए पड़ाए जाइत छथि वा जाए लेल छटपटाइत रहैत छथि - ओ तँ सभ देखलोपर टहलैत-बुलैत रहलाह। ओहि दिनुक आनन्द कहलो ने जाइत अछि-मोने-मोन आनन्द लैत छी- 500 सँ उपर मैथिलीभाषी जनसमुदायक बीच ओ सभसँ सर्वसाधारण जकाँ मिलैत-घुमैत जनताक नेता लगैत छलाह। बड़े प्रेम ओ सौहार्द्रसँ सभटा सुनैत, पुछैत, घुमलाह-तीन-चारि विशाल कक्षमे संगे-संग घुमलाह, चारूकात घुरि-घुरि सभ वस्तुकेँ देखैत, उनटओबैत रहलाह। अन्तमे पाग पहिरि फोटो खिचबओलनि। कहलिअनि, किछु प्रदर्शनीक सम्बन्ध अपन विचार लिखि देथु। कहलनि (एहिठाम लिखि दिअ आ कि डेरासँ लीख कए पठा दिअ- थाकल छलाह, वा विचार नापि-तौलिकेँ शब्दक प्रयोग करए चाहैत छलाह-से नहि बुझाएल मुदा डेरासँ पछाति हस्ताक्षर अंग्रेजी हिन्दी दुनूमे (किएक?) कए क' लिखि पठओलनि-ई साधारण बात नहि छल। बहुत सोचलापर हुनक Sincerity मात्र बुझाइत अछि - सत्यनिष्ठा एवं हृदयसँ स्नेह। से पाबि हमर मोनक की दशा भेल से की कहू ?

ओकरा पश्चात् बहुतो नेता ओ बड़का-बड़का लोकसँ सम्पर्क भेल। मुदा ओ स्नेह, ओ संवेदनशीलता, ओ विचार, ओ आत्मीयता, विषयकेँ ओ तर्ककेँ सुनबाक- बुझबाक उत्सुकता

अनकामे नहि भेटल। आब तँ लोक अपने पत्रक उत्तरो नहि दैत छथि - अपन प्राइवेट सेक्रेटरीसँ मात्र पत्रक पहुँचनामा पठाए देल तँ हमर अहोभाग्य! विषय बुझब, धैर्यसँ तर्क सुनब- ई तँ बुझाइछ, लोकमे छैके नहि। जे केओ किछु सुनितहुँ छथि से बहुधा नाटक करैत छथि। उपरका मोनसँ सुनैत छथि, काजो कए दैत छथि, मुदा ओ Sincerity, ओ भितरसँ बुझबाक चेष्टा नहि करैत छथि।

ओ कहलनि; जनगणनामे कम मैथिली भाषी संख्या लिखैत अछि तँ तकर परवाहि नहि करू, मात्र 2 लाख संख्यक आइसलेण्डक भाषा-भाषी छथि, मुदा ओहूमे नीक पोथीपर नोबेल पुरस्कार भेटलैक अछि। दोसर, सरकार मानए तकर चिन्ता नहि कए, देखी जे विद्वान् मानथि, विश्वविद्यालय मानए, लेखक मानथि- से जँ मैथिलीकेँ मानैत छथि, तँ सरकारकेँ झक मारि कए (यदि ओ जनताक सरकार अछि तँ) मैथिलीकेँ मानए पड़तैक, आर जँ एतेक पैघ क्षेत्रमे मैथिली प्रचलित अछि, जे हम सभ कहैत छी, तँ ओकर सरकारी काजमे, राजकाजमे, कोर्ट-कचहरीमे सेहो उपयोग करबाक स्वीकृति देबहि पड़तैक।

तेँ कहैत छी-जमाहिरलाल वस्तुत: 'जमाहिर' छलाह, 'लालो' छलाह, ओ हीरा छलाह; हुनका जेहन देखलिअनि, जेहन पओलिअनि, तकर तुलना नहि भए सकैछ आ प्राय: एहि जन्ममे ओ देखबामे आब नहि आओत। मैथिली आन्दोलनमे ओ एहि सरलतासँ घुलि-मिलि संग देलनि तकर हमरा कोनो आशा नहि छल।

शब्दार्थ

प्रतिवाद	-	विरोध
उपादेयता	-	उपयोगिता
समीचीन	-	उचित
क्षुब्ध	-	दु:खी
क्षोभ	-	दु:ख
उपक्रम	-	प्रयास
प्राच्य	-	पूरब

Far

प्रश्न ओ अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नक उचित विकल्पक चुनाव करू :

(i) इलाहाबादक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति द्वारा दसटा दुर्लभ प्राचीन मैथिली पोथी सभ प्रकाशित कयल गेल छल –

(क) 1965 मे (ख) 1961 मे

(ग) 1962 मे (घ) 1964 मे

(ii) इतिहास प्रसिद्ध विद्वान् छलाह –

(क) डा० महेश्वरी प्रसाद (ख) डा० ईश्वरी प्रसाद

(ग) डा० भैरवी प्रसाद (घ) डा० रामेश्वरी प्रसाद

2. निम्नलिखित रिक्त स्थानक पूर्त्ति करू :

(क) किछुए दिनुक प्रतीक्षा कयला पर ओ दिसम्बर ..... तारीख कैं सात बजे साँझखन प्रदर्शनीक उद्घाटन करबाक समय निर्धारित कयलनि।

(ख) उड़िसाक नेता डा० हरेकृष्ण ..... बजलाह।

3. निम्नलिखितमे शुद्ध-अशुद्ध फराक करू :

(क) श्री मुल्कराज आनन्द (चण्डीगढ़) प्रस्ताव कएल जे एकटा राष्ट्रीय मैथिली कमीशन बहाल कएल जाए जे मैथिलीक मान्यताकैं जाँच करए।

(ख) प्रदर्शनीकहेतु मात्र दस मिनटक समय निर्धारित कएने छलाह।

4. निम्नलिखित लघूत्तरीय प्रश्नक उत्तर लिखू :

(i) लेखक किनकासँ विशेष प्रभावित भेल छलाह ?

(ii) साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक विषयमे लेखक किनकासँ भेंट कयलनि।

(iii) 1962 मे साहित्य अकादेमीक सचिव के छलाह ?

(iv) ओहि समयकैं साहित्य अकादेमीक उपाध्यक्ष के छलाह?

(v) लेखक साहित्य अकादेमीक कोन सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह?

5. निम्नलिखित दीर्घोत्तरीय प्रश्नक-उत्तर लिखू :

(i) साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक विषयमे लेखकक प्रयासक वर्णन करू।

(ii) पं० जवाहर लाल नेहरूक भाषा प्रेमक वर्णन करू।

(iii) मैथिलीक पक्षमे दोसर भाषाक विद्वान द्वारा प्रकट कयल गेल विचारक उल्लेख करू।

(iv) मैथिली कोना साहित्य अकादेमीमे प्रवेशक योग्यता रखैत अछि।

6. गतिविधि -

(i) साहित्य अकादेमीक विषय मे जानकारी प्राप्त करथि।

(ii) साहित्य अकादेमीसँ पाँच पुरस्कृत पोथीक नाम लिखू।

(iii) नेहरूक जीवनवृत्तक संकलन करू।

7. निर्देश -

(i) शिक्षक छात्रसँ भाषाक महत्त्व पर भाषण प्रतियोगिताक आयोजन कराबथि।

(ii) साहित्य अकादेमीक सम्बन्धमे शिक्षक छात्रकेँ जानकारी देथि।

(iii) शिक्षक छात्रकेँ नेहरूक उदार चरित्रक उल्लेख करथि।

लिली रे

मैथिली कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर लिली रेक जन्म रामनगर (पूर्णिया) मे 26 जनवरी 1933 ई. मे भेल छलनि। हिनक 'रंगीन परदा' मैथिली कथा साहित्यमे चर्चित अछि। मरीचिका (दू खण्ड), पटाक्षेप, उपसंहार आदि हिनक प्रसिद्ध उपन्यास अछि। हिनक कथाक कथ्य ओ शैली अन्यसँ भिन्न अछि। हिनक प्रत्येक कथामे विचाराभिव्यक्ति स्पष्ट रहैत छनि। मरीचिका उपन्यास पर हिनका साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल अछि। हिनका प्रबोध साहित्य सम्मान सेहो भेटल छनि। ई दार्जिलिंगमे रहैत छथि।

चन्द्रमुखी कथामे मायक त्याग ओ ममताक एक कारुणिक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। भारतमे संतानक लेल माय ममताक मञ्जूषा, वात्सल्यक वाटिका ओ स्नेहक सुख-सदन मानल गेल अछि। ओ अपन संतानक लेल कोनो त्याग करबाक लेल तैयार रहैत अछि।

सम्पूर्ण कथामे लेखिका अत्यन्त मार्मिक ढंगसँ संतान-स्नेहक चित्र उपस्थित कयने छथि।